इकाई 13 विविध भारतीय विचारकों के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विचार

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 स्वामी विवेकानंद

13.3 राजा राम मोहन राय

13.4 ज्योतिबा फुले

13.5 भीमराव आम्बेडकर

13.6 महात्मा गांधी

13.7 गुरु नानक देव

13.8 स्वामी दयानंद सरस्वती

13.9 सरदार वल्लभभाई पटेल

13.10 सारांश

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.12 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप -

- भारत देश की समृद्ध संस्कृति और वैविध्यपूर्ण इतिहास को जानेंगे।
- भारत देश के अनेक महान् विचारकों के विषय में जानेंगे।
- भारतीय विचारकों के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय योगदान को जानेंगे।

13.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येताओ ! भारत देश अपनी समृद्ध संस्कृति और विविधतापूर्ण इतिहास के लिए जाना जाता है । भारत ने अनेक महान् विचारकों को जन्म दिया है। इन विचारकों ने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार किए और समाज को बेहतर बनाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण विचारों को प्रस्तुत किया है ।

इस इकाई के अंतर्गत हम विभिन्न भारतीय विचारकों के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विचारों को जानेंगे । स्वामी विवेकानंद, राजा राम मोहन राय, ज्योतिबा फुले, भीमराव अंबेडकर, महात्मा गांधी, गुरु नानक देव, स्वामी दयानंद सरस्वती, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि कुछ प्रमुख भारतीय विचारक हैं जिनके विचारों और कृत्यों ने भारत की प्रगति और

विकास में बहुमूल्य योगदान दिया है।

13.2 स्वामी विवेकानन्द (जन्म: 12 जनवरी 1863 - मृत्यु: 4 जुलाई 1902)

स्वामी विवेकानन्द 19वीं और 20वीं शताब्दी के एक महान भारतीय विचारक, आध्यात्मिक गुरु और युवाओं के प्रेरणा स्रोत थे। उन्होंने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के सभी पहलुओं पर गहन विचार किए और इन विचारों ने भारत और विश्व को प्रभावित किया। स्वामी विवेकानन्द जी ने 25 वर्ष की आयु में गेरुआ वस्त्र धारण कर संन्यासी जीवन अपनाया। उन्होंने पैदल ही पूरे भारत की यात्रा की, विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और दर्शनों का अध्ययन किया। विवेकानंद जी ने 31 मई, 1893 को अपनी यात्रा शुरू की और जापान, चीन और कनाडा होते हुए अमेरिका के शिकागो पहुँचे। 11 सितम्बर, 1893 को अमेरिका में विश्व धर्म परिषद् में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन्होंने पश्चिमी दर्शकों को वेदांत दर्शन, योग और कर्मयोग से अवगत कराया। उनके भाषणों ने श्रोताओं को गहरा प्रभावित किया और उन्हें "साइक्लोनिक हिन्दू" की उपाधि मिली। विवेकानंद जी ने अमेरिका में तीन वर्ष बिताए, धर्म, दर्शन और योग पर व्याख्यान दिए। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की कई शाखाएँ स्थापित कीं और अनेक अमेरिकी विद्वानों को अपना शिष्य बनाया।

विवेकानंद जी का मानना था कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाते हैं और सभी मनुष्य समान हैं। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार, सर्वधर्म समभाव और राष्ट्रीय जागरण पर बल दिया। वे "गरीबों के सेवक" के रूप में जाने जाते थे और उन्होंने भारत के गौरव को विश्व स्तर पर उजागर करने का प्रयास किया।

सामाजिक विचार

विवेकानन्द जी का मानना था कि मानव का सर्वोच्च लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति में ईश्वरत्व विद्यमान है और हमें अपने जीवन में इस ईश्वरत्व को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत और बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने महिला शिक्षा और सामाजिक न्याय पर बल दिया। वे सभी धर्मों का सम्मान करते थे और सर्वधर्म समभाव में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि सभी धर्मों का लक्ष्य एक ही है - आत्म-साक्षात्कार।

धार्मिक विचार

विवेकानन्द जी वेदांत दर्शन के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने वेदांत के संदेशों को सरल भाषा में लोगों तक पहुंचाया। उनका मानना था कि कर्मयोग जीवन का सर्वोत्तम मार्ग है। उन्होंने लोगों को कर्म करने और फल की इच्छा त्याग करने का आह्वान किया। उन्होंने अद्वैत वेदांत के सिद्धांतों पर आधारित एकता और समानता का संदेश दिया।

राष्ट्रीय विचार

विवेकानन्द जी ने भारत में राष्ट्रीय जागरण को प्रेरित किया। उन्होंने युवाओं को आत्मनिर्भर और शक्तिशाली बनने का आह्वान किया। उन्होंने हिन्दू धर्म की रक्षा और पुनरुत्थान का आह्वान किया। उनका मानना था कि हिन्दू धर्म में विश्व को आध्यात्मिकता और शांति का

संदेश देने की क्षमता है। उनका मानना था कि भारत सर्वोच्च राष्ट्र बनने की क्षमता रखता है। उन्होंने युवाओं को राष्ट्र निर्माण में योगदान करने के लिए प्रेरित किया।

स्वामी विवेकानन्द के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। वे हमें आत्म-विकास, सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता और विश्व शांति के लिए प्रेरित करते हैं।

बोध प्रश्न - 1

1. स्वामी विवेकानन्द ने कितने वर्ष की आयु में गेरुआ वस्त्र धारण कर संन्यासी जीवन अपनाया ?
2. स्वामी विवेकानंद ने कब अपनी यात्रा शुरू की ?
3. स्वामी विवेकानंद ने कब अमेरिका में विश्व धर्म परिषद् में अपना अद्वितीय भाषण दिया ?

अभ्यास प्रश्न - 1

1. स्वामी विवेकानंद के सामाजिक विचारों को अपने शब्दों में लिखें।

……..

……..

……..

……..

……..

……..

13.3 राजा राम मोहन राय (22 मई 1772 - 27 सितंबर 1833)

राजा राम मोहन राय, 18 वीं शताब्दी के एक महान विचारक, सामाज - सुधारक और धार्मिक नेता थे, जिन्होंने भारत के आधुनिकीकरण और सामाजिक न्याय की नींव रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचारों ने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में उनका विशिष्ट स्थान है। वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। उन्होंने बाल-विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का भरपूर विरोध किया।

सामाजिक विचार

सती प्रथा का विरोध: राय जी ने सती प्रथा, जिसमें विधवाओं को उनके पतियों के चिता पर जला दिया जाता था, का पुरजोर विरोध किया। उन्होंने इस प्रथा को अमानवीय और क्रूर बताया और इसके खिलाफ आवाज उठाई।

बाल विवाह और बहुपत्नीत्व का विरोध: उन्होंने बाल विवाह और बहुपत्नीत्व जैसी सामाजिक कुरीतियों का भी विरोध किया। उनका मानना था कि इन प्रथाओं से महिलाओं का शोषण होता है और समाज की प्रगति में बाधा आती है।

नारी शिक्षा का समर्थन: राय जी महिला शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने और समाज में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल खोले और महिला शिक्षा के महत्त्व पर जोर दिया।

जातिवाद का विरोध: राय जी जातिवाद के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि सभी मनुष्य समान हैं और जाति के आधार पर भेदभाव गलत है। उन्होंने सभी जातियों के लोगों के बीच समानता और भाईचारे का समर्थन किया।

धार्मिक विचार

एकेश्वरवाद: राय जी एकेश्वरवादी थे। उन्होंने बहुदेववाद और मूर्ति पूजा का विरोध किया। उनका मानना था कि केवल एक ही ईश्वर है और उसकी पूजा की जानी चाहिए।

धार्मिक सुधार: उन्होंने धार्मिक रीति-रिवाजों और कर्मकांडों में सुधार का आह्वान किया। उन्होंने अंधविश्वासों और रूढ़ियों का विरोध किया और तर्कसंगत धार्मिक विचारों को बढ़ावा दिया।

धार्मिक सहिष्णुता: राय जी सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के लोगों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया।

राष्ट्रीय विचार

राष्ट्रीय जागरण: राय जी भारत में राष्ट्रीय जागरण के अग्रणी स्तंभ थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति और विरासत पर गर्व करने का आह्वान किया और भारत को एक मजबूत और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने के लिए प्रेरित किया।

सामाजिक एकता: उन्होंने सभी धर्मों और जातियों के लोगों के बीच सामाजिक एकता और भाईचारे पर बल दिया। उनका मानना था कि एकजुट भारत ही एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बन सकता है।

आधुनिक शिक्षा: राय जी आधुनिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास का आधार माना और भारत में शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए प्रयास किए।

राजा राम मोहन राय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे जिन्होंने सामाजिक सुधार, धार्मिक सुधार और राष्ट्रीय जागरण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचारों ने भारत के आधुनिकीकरण और सामाजिक न्याय की नींव रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे आज भी भारत और पूरे विश्व के लिए प्रेरणा के स्रोत हैं।

बोध प्रश्न - 2

1. राजा राम मोहन राय किस समाज के संस्थापक थे ?
2. राजा राम मोहन राय ने किसको राष्ट्रीय विकास का आधार माना ?

अभ्यास प्रश्न - 1

1. राजा राम मोहन राय के कार्यों का भारत के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 ज्योतिबा फुले (11 अप्रैल 1827 - 28 नवम्बर 1890)

महात्मा ज्योतिराव गोविंदराव फुले एक भारतीय समाज सुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हें "महात्मा फुले" एवं "ज्योतिबा फुले" के नाम से भी जाना जाता है। सितम्बर 1873 में इन्होंने महाराष्ट्र में सत्य शोधक समाज नामक संस्था का गठन किया। महिलाओं व पिछड़े और अछूतों के उत्थान के लिये इन्होंने अनेक कार्य किए। समाज के सभी वर्गों को शिक्षा प्रदान करने के ये प्रबल समर्थक थे। वे भारतीय समाज में प्रचलित जाति पर आधारित विभाजन और भेदभाव के विरुद्ध थे। [1]

इनका मूल उद्देश्य स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार प्रदान करना, बाल विवाह का विरोध, विधवा विवाह का समर्थन करना रहा है। फुले समाज को कुप्रथा और अंधश्रद्धा के जाल से मुक्त करना चाहते थे। अपना सम्पूर्ण जीवन उन्होंने स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने में, स्त्रियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरुक करने में व्यतीत किया । 19 वीं सदी में स्त्रियों को शिक्षा नहीं दी जाती थी। फुले महिलाओं को स्त्री-पुरुष भेदभाव से बचाना चाहते थे। उन्होंने कन्याओं के लिए भारत देश की पहली पाठशाला पुणे में बनाई थी। स्त्रियों की तत्कालीन दयनीय स्थिति से फुले बहुत व्याकुल और दु:खी होते थे इसीलिए उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि वे समाज में क्रांतिकारी बदलाव लाकर ही रहेंगे। उन्होंने अपनी धर्मपत्नी सावित्रीबाई फुले को स्वयं शिक्षा प्रदान की। सावित्रीबाई फुले भारत की प्रथम महिला अध्यापिका थीं। उनका जीवन और कार्य सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विचारों से प्रेरित था, जिन्होंने महाराष्ट्र और पूरे भारत को प्रभावित किया।

सामाजिक विचार

जातिवाद का विरोध: फुले जाति व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने जातिवाद को समाज की सबसे बड़ी बुराई माना और इसका पुरजोर विरोध किया। उन्होंने दलितों और अन्य शोषित वर्गों के उत्थान के लिए काम किया।

महिला शिक्षा और अधिकार: फुले महिला शिक्षा और अधिकारों के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्रदान करने, समाज में योगदान करने और पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने लड़कियों के लिए स्कूल खोले और महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम किया।

1

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%A4%E0%A4%BF%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B5_%E0%A4%97%E0%A5%8B%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%82%E0%A4%A6%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B5_%E0%A4%AB%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%87

सामाजिक कुरीतियों का विरोध: फुले ने बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने इन कुरीतियों को महिलाओं और समाज के लिए हानिकारक माना और इनके खिलाफ आवाज उठाई।

धार्मिक विचार

धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध: फुले धार्मिक अंधविश्वासों और रूढ़ियों के विरोधी थे। उन्होंने तर्कसंगत धार्मिक विचारों को बढ़ावा दिया और लोगों को अंधविश्वासों से मुक्त होने का आह्वान किया।

सभी धर्मों का सम्मान: फुले सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के लोगों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया।

सामाजिक न्याय पर आधारित धर्म: फुले का मानना था कि धर्म का आधार सामाजिक न्याय और समानता होना चाहिए। उन्होंने जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव करने वाले धर्म का विरोध किया।

राष्ट्रीय विचार

स्वदेशी वस्तुओं का समर्थन: फुले स्वदेशी वस्तुओं के समर्थक थे। उन्होंने लोगों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और भारतीय उत्पादों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

शिक्षा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण: फुले का मानना था कि शिक्षा राष्ट्र निर्माण का आधार है। उन्होंने शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने और भारत को एक मजबूत और समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए प्रयास किए।

सामाजिक एकता: फुले ने सभी धर्मों, जातियों और समुदायों के लोगों के बीच सामाजिक एकता और भाईचारे पर बल दिया। उनका मानना था कि एकजुट भारत ही एक स्वतंत्र और समृद्ध राष्ट्र बन सकता है।

ज्योतिबा फुले एक दूरदर्शी, विचारक और सामाजिक क्रांतिकारी थे जिन्होंने भारत में सामाजिक न्याय, समानता और राष्ट्रीय जागरण के लिए अथक संघर्ष किया। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और वे भारत और पूरे विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

बोध प्रश्न - 3

1. ज्योतिबा फुले ने सितम्बर 1873 में महाराष्ट्र में किस संस्था का गठन किया ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. ज्योतिबा फुले ने कन्याओं के लिए भारत देश की पहली पाठशाला कहाँ बनाई थी ?

   ……..

   ……..

   ……..

3. भारत की प्रथम महिला अध्यापिका कौन थीं ?

……..

……..

……..

13.5 भीमराव आम्बेडकर (14 अप्रैल 1891 – 6 दिसंबर 1956)

भीमराव रामजी आम्बेडकर डॉ॰ बाबासाहब आम्बेडकर नाम से लोकप्रिय, भारतीय बहुज्ञ, विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, राजनीतिज्ञ, और समाज सुधारक थे। उन्होंने दलित बौद्ध आंदोलन को प्रेरित किया और अछूतों (दलितों) से सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया था। श्रमिकों, किसानों और महिलाओं के अधिकारों का समर्थन भी किया था। वे स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री, भारतीय संविधान के जनक एवं भारत गणराज्य के निर्माताओं में से एक थे। भीमराव अंबेडकर भारत के संविधान के निर्माता, एक महान सामाज सुधारक, राजनीतिक नेता और विद्वान थे। उन्होंने अपना जीवन दलितों और अन्य शोषित वर्गों के उत्थान और सामाजिक न्याय के लिए समर्पित कर दिया। उनके विचारों ने भारत के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन को गहराई से प्रभावित किया। सन् 1990 में, उन्हें भारत रत्न, भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से मरणोपरांत सम्मानित किया गया था।[2]

सामाजिक विचार

जाति व्यवस्था का विरोध: अंबेडकर जाति व्यवस्था के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने जातिवाद को समाज की सबसे बड़ी बुराई माना और इसका पुरजोर विरोध किया। उन्होंने दलितों और अन्य शोषित वर्गों के लिए समानता और न्याय का आह्वान किया।

अस्पृश्यता का उन्मूलन: अंबेडकर अस्पृश्यता के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने इसे अमानवीय और गैरकानूनी प्रथा माना और इसका उन्मूलन करने के लिए काम किया। उन्होंने दलितों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए प्रयास किए।

महिला शिक्षा और अधिकार: अंबेडकर महिला शिक्षा और अधिकारों के समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, समाज में योगदान करने और पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई कानूनों का भी समर्थन किया।

धार्मिक विचार

बौद्ध धर्म अपनाना: अंबेडकर ने 1956 में बौद्ध धर्म अपना लिया। उन्होंने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों से बचने के लिए बौद्ध धर्म को एकमात्र मार्ग माना।

धर्मनिरपेक्षता: अंबेडकर भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाने के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि धर्म और राज्य अलग-अलग होने चाहिए और सभी नागरिकों को अपनी पसंद

[2] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A5%80%E0%A4%AE%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%B5_%E0%A4%86%E0%A4%AE%E0%A5%8D%E0%A4%AC%E0%A5%87%E0%A4%A1%E0%A4%95%E0%A4%B0

के धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता: अंबेडकर सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के लोगों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया।

राष्ट्रीय विचार

राष्ट्रीय एकता: अंबेडकर राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने सभी धर्मों, जातियों और समुदायों के लोगों के बीच एकता और भाईचारे पर बल दिया।

सामाजिक न्याय और समानता: अंबेडकर का मानना था कि भारत का संविधान सामाजिक न्याय और समानता पर आधारित होना चाहिए। उन्होंने सभी नागरिकों के लिए समान अधिकार और अवसरों का समर्थन किया।

लोकतंत्र: अंबेडकर भारत को एक लोकतांत्रिक राष्ट्र बनाने के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि लोकतंत्र ही सभी नागरिकों को अपनी आवाज उठाने और देश के विकास में योगदान करने का अवसर प्रदान कर सकता है।

भीमराव अंबेडकर एक महान विचारक, सामाजिक सुधारक और राष्ट्रीय नेता थे जिन्होंने भारत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके विचारों ने सामाजिक न्याय, समानता और राष्ट्रीय एकता के लिए भारत के संघर्ष को आकार दिया। वे आज भी भारत और पूरे विश्व के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

बोध प्रश्न - 4

1. स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि एवं न्याय मन्त्री कौन थे ?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

2. भीम राव अम्बेडकर को कब भारत रत्न से सम्मानित किया गया था ?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

3. भीम राव अंबेडकर ने कब बौद्ध धर्म को अपनाया ?

   ……..

   ……..

   ……..

   ……..

13.6 महात्मा गांधी (जन्म: 2 अक्टूबर 1869 - निधन: 30 जनवरी 1948)

मोहनदास करमचंद गांधी, जिन्हें महात्मा गांधी के नाम से जाना जाता है, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता थे। गांधी जी ने सत्याग्रह (व्यापक सविनय अवज्ञा) के माध्यम से अत्याचार के खिलाफ लड़ने की अगुवाई की। उनकी नीति अहिंसा (पूर्ण अहिंसा) के सिद्धांत पर आधारित थी, जिसने भारत और दुनिया भर में नागरिक अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए आंदोलनों को प्रेरित किया। गांधी जी का मानना था कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से ही सच्चा न्याय प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने सत्याग्रह को एक शक्तिशाली हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जिसके ज़रिए उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी और भारत को स्वतंत्रता दिलाई। गांधी जी का मानना था कि हिंसा कभी भी समस्या का समाधान नहीं है। उनका मानना था कि सभी जीवों के प्रति प्रेम और करुणा का भाव रखना ज़रूरी है । गांधी जी सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उनका मानना था कि सभी धर्मों में सच्चाई का अंश होता है और सभी मनुष्य समान हैं। गांधी जी का मानना था कि भारत को आत्मनिर्भर बनना चाहिए। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने का आह्वान किया। गांधी जी ने जातिवाद, छुआछूत और अन्य सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के प्रसार का भी समर्थन किया।[3]

गांधी जी का भारत और दुनिया भर पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे न केवल भारत के स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि वे एक महान विचारक, सामाज सुधारक और आध्यात्मिक नेता भी थे। उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं और वे दुनिया भर के लोगों को प्रेरित करते रहते हैं।

सामाजिक विचार

- **सर्वधर्म समभाव:** गांधी जी सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उनका मानना था कि सभी धर्म सत्य की ओर ले जाते हैं और सभी मनुष्य समान हैं। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता और सभी धर्मों के लोगों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व पर बल दिया।
- **अस्पृश्यता का उन्मूलन:** गांधी जी अस्पृश्यता के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने इसे अमानवीय और गैरकानूनी प्रथा माना और इसका उन्मूलन करने के लिए काम किया। उन्होंने दलितों को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए प्रयास किए।
- **ग्रामीण विकास:** गांधी जी ग्रामीण विकास के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। उन्होंने ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा दिया, शिक्षा का प्रसार किया और स्वदेशी वस्तुओं का समर्थन किया।
- **महिला सशक्तिकरण:** गांधी जी महिला सशक्तिकरण के समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, समाज में योगदान करने और पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

[3] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%B9%E0%A4%BE%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AE%E0%A4%BE_%E0%A4%97%E0%A4%BE%E0%A4%82%E0%A4%A7%E0%A5%80

धार्मिक विचार

- **सत्य और अहिंसा:** गांधी जी के जीवन और विचारों का आधार सत्य और अहिंसा था। उनका मानना था कि सत्य ही सर्वोच्च है और अहिंसा ही एकमात्र रास्ता है। उन्होंने सत्याग्रह का दर्शन दिया, जिसके अनुसार सत्य की प्राप्ति के लिए अहिंसक प्रतिरोध किया जाना चाहिए।
- **ईश्वर में विश्वास:** गांधी जी ईश्वर में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि ईश्वर सर्वव्यापी है और सभी प्राणियों में वास करता है। उन्होंने भक्ति और कर्मयोग को जीवन का आधार माना।

राष्ट्रीय विचार

- **स्वदेशी:** गांधी जी स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने भारतीयों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा दिया और आत्मनिर्भर भारत का सपना देखा।
- **अहिंसक स्वतंत्रता:** गांधी जी ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अहिंसक मार्ग का प्रयोग किया। उन्होंने सत्याग्रह, अहिंसक प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा के माध्यम से ब्रिटिश शासन के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
- **सर्वोदय:** गांधी जी का लक्ष्य सर्वोदय था, जिसका अर्थ है सभी का उत्थान। उनका मानना था कि समाज में सभी को समान अवसर और न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने गरीबों, दलितों और शोषित वर्गों के उत्थान के लिए काम किया।

महात्मा गांधी एक महान आत्मा थे जिन्होंने दुनिया को अहिंसा और सत्य का संदेश दिया। उनके विचारों ने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाई बल्कि दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया। वे आज भी प्रासंगिक हैं और हमें एक बेहतर दुनिया बनाने के लिए प्रेरित करते हैं।

बोध प्रश्न - 5

1. गांधी जी के अनुसार किस माध्यम से सच्चा न्याय प्राप्त किया जा सकता है ?
2. गांधी जी ने किसको बढ़ावा देने का आह्वान किया ?

अभ्यास प्रश्न - 3

1. गाँधी जी के सामाजिक विचारों को अपने शब्दों में लिखें ।

……..

……..

……..

……..

……..

……..

13.7 गुरु नानक देव (कार्तिक पूर्णिमा 1469 – 22 सितंबर 1539)

नानक सिखों के प्रथम (आदि) गुरु हैं। इनके अनुयायी इन्हें नानक, नानक देव जी, बाबा नानक और नानकशाह नामों से सम्बोधित करते हैं। नानक अपने व्यक्तित्व में दार्शनिक, योगी, गृहस्थ, धर्मसुधारक, समाजसुधारक, कवि, देशभक्त और विश्वबन्धु - सभी के गुण समेटे हुए थे। इनका जन्म स्थान गुरुद्वारा ननकाना साहिब पाकिस्तान में और समाधि स्थल करतारपुर साहिब पाकिस्तान में स्थित है।[4]

नानक सर्वेश्वरवादी थे। उन्होंने सनातन मत की मूर्तिपूजा की शैली के विपरीत एक परमात्मा की उपासना का एक अलग मार्ग मानवता को दिया। उन्होंने हिन्दू पन्थ के सुधार के लिए कार्य किये। साथ ही उन्होंने तत्कालीन राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थितियों पर भी दृष्टि डाली है। सन्त साहित्य में नानक उन सन्तों की श्रेणी में हैं जिन्होंने नारी को बड़प्पन दिया है।

गुरु नानक देव सिख धर्म के संस्थापक थे, जिन्होंने 15वीं शताब्दी में भारत में सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विचारों को नया रूप दिया। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ सभी समान हों, चाहे वे किसी भी जाति, धर्म या लिंग के हों।

सामाजिक विचार

- **समानता:** गुरु नानक देव ने जातिवाद, छुआछूत और लिंगभेद जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। उन्होंने सभी मनुष्यों को समान माना और एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ सभी को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों।
- **सर्वधर्म समभाव:** गुरु नानक देव सभी धर्मों का सम्मान करते थे। उन्होंने सभी धर्मों में सच्चाई का अंश माना और धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया।
- **नारी सशक्तिकरण:** गुरु नानक देव महिलाओं को पुरुषों के समान मानते थे। उन्होंने महिला शिक्षा का समर्थन किया और महिलाओं को समाज में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- **सामाजिक न्याय:** गुरु नानक देव ने गरीबों, शोषितों और वंचितों के लिए न्याय का समर्थन किया। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ सभी को सामाजिक न्याय और समानता प्राप्त हो।

धार्मिक विचार

- **एक ईश्वर:** गुरु नानक देव ने एक ईश्वर की अवधारणा पर बल दिया। उनका मानना था कि ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।
- **नाम सिमरन:** गुरु नानक देव ने 'नाम सिमरन' (ईश्वर के नाम का स्मरण) को आध्यात्मिक जीवन का आधार माना। उन्होंने लोगों को 'वाहेगुरु' नाम का जाप करने और ईश्वर के साथ जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

[4] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%97%E0%A5%81%E0%A4%B0%E0%A5%81_%E0%A4%A8%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%95

- **कर्मयोग:** गुरु नानक देव ने कर्मयोग (कर्तव्यनिष्ठा के साथ कर्म करना) पर बल दिया। उनका मानना था कि कर्म करते हुए ईश्वर का स्मरण करना और नि:स्वार्थ भाव से कार्य करना आध्यात्मिक जीवन का मार्ग है।
- **सत्संग:** गुरु नानक देव ने 'सत्संग' (संतों की संगत) को आध्यात्मिक विकास के लिए आवश्यक माना। उनका मानना था कि सत्संग से मनुष्य को सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है और वह आध्यात्मिक उन्नति करता है।

राष्ट्रीय विचार

- **एकता और भाईचारा:** गुरु नानक देव ने एकता और भाईचारे का संदेश दिया। उन्होंने लोगों को धर्म, जाति और भाषा से ऊपर उठकर एकजुट होने के लिए प्रोत्साहित किया।
- **सार्वभौमिक नागरिक:** गुरु नानक देव ने 'खालसा' (सिख समुदाय) की अवधारणा को एक 'सार्वभौमिक नागरिक' के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं और सभी को समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए।
- **समाज सेवा:** गुरु नानक देव ने समाज सेवा को आध्यात्मिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना। उन्होंने लोगों को दूसरों की सेवा करने और समाज के उत्थान में योगदान करने के लिए प्रोत्साहित किया।

  गुरु नानक देव एक महान विचारक, समाज सुधारक और धार्मिक नेता थे जिन्होंने भारत में सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय विचारों को नया रूप दिया।

बोध प्रश्न - 6

1. सिखों के प्रथम (आदि) गुरु कौन हैं ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. गुरु नानक देव जी का जन्म स्थान कहाँ स्थित है ?

   ……..

   ……..

   ……..

13.8 स्वामी दयानंद सरस्वती (जन्म 12 फरवरी 1824 - मृत्यु 30 अक्टूबर 1883)

महर्षि दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के चिन्तक तथा आर्य समाज के संस्थापक थे। उनके बचपन का नाम 'मूलशंकर' था। उन्होंने वेदों के प्रचार-प्रसार के लिए मुम्बई में आर्यसमाज (श्रेष्ट जीवन पद्धति) की स्थापना की। 'वेदों की ओर लौटो' यह उनका ही दिया हुआ प्रमुख नारा था। उन्होंने कर्म सिद्धान्त, पुनर्जन्म तथा संन्यास को अपने दर्शन के स्तम्भ बनाये। उन्होंने ही सबसे पहले 1876 में 'स्वराज्य' का नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया। प्रथम

जनगणना के समय स्वामी जी ने आगरा से देश के सभी आर्यसमाजों को यह निर्देश भिजवाया कि 'सब सदस्य अपना धर्म 'सनातन धर्म' लिखवाएँ।[5]

वेदों को छोड़ कर कोई अन्य धर्मग्रन्थ प्रमाण नहीं है - इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना प्रारम्भ किया और जहाँ-जहाँ वे गये प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान उनसे हार मानते गये। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में वे धाराप्रवाह बोलते थे। साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे।

महर्षि दयानन्द का समाज सुधार में व्यापक योगदान रहा। महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों तथा अन्धविश्वासों और रूढियों-बुराइयों व पाखण्डों का खण्डन व विरोध किया। उनके ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना का प्रमुख उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार था। इसके साथ-साथ इसमें ईसाई, इस्लाम एवं अन्य कई पन्थों व मतों का खण्डन भी है। उस समय हिन्दू शास्त्रों का गलत अर्थ निकाल कर हिन्दू धर्म एवं संस्कृति को बदनाम करने का षड्यन्त्र भी चल रहा था। इसी को ध्यान में रखकर महर्षि दयानन्द ने इसका नाम सत्यार्थ प्रकाश (सत्य + अर्थ + प्रकाश) अर्थात् सही अर्थ पर प्रकाश डालने वाला (ग्रन्थ) रख।[6] वे योगी थे तथा प्राणायाम पर उनका विशेष बल था। वे सामाजिक पुनर्गठन में सभी वर्णों तथा स्त्रियों की भागीदारी के पक्षधर थे। उनमें न केवल देशभक्ति की भावना दिखाई देती थी बल्कि वह तो 1857 के स्वतंत्रा संग्राम में भाग लेने वाले अग्रिम लोगो में थे।

सामाजिक विचार

समाज सुधार: स्वामी दयानंद जी ने जातिवाद, छुआछूत, बाल विवाह, सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया। उन्होंने महिला शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

राष्ट्रीयता: स्वामी दयानंद जी राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित थे। उन्होंने भारत को एक मजबूत और स्वतंत्र राष्ट्र बनाने का सपना देखा।

शिक्षा: स्वामी दयानंद जी शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार मानते थे। उन्होंने सभी के लिए शिक्षा का समर्थन किया और शिक्षा प्रणाली में सुधार का आह्वान किया।

5

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%A6%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6_%E0%A4%B8%E0%A4%B0%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B5%E0%A4%A4%E0%A5%80

6

https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B8%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5_%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6#:~:text=%E0%A4%AE%E0%A5%87%E0%A4%82%20%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%95%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%AF%20%E0%A4%B9%E0%A5%81%E0%A4%86%E0%A5%A4-,%E0%A4%B8%E0%A4%A4%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5%20%E0%A4%AA%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%95%E0%A4%BE%E0%A4%B6%20%E0%A4%95%E0%A5%80%20%E0%A4%B8%E0%A4%82%E0%A4%B0%E0%A4%9A%E0%A4%A8%E0%A4%BE,%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A4%AE%E0%A4%A4%E0%A4%BE%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%B0%2C%20%E0%A4%88%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%88%20%E0%A4%AE%E0%A4%A4%20%E0%A4%A4%E0%A4%A5%E0%A4%BE%20%E0%A4%87%E0%A4%B8%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%BE%E0%A4%AE%E0%A5%A4

धार्मिक विचार

वेदों की प्रधानता: स्वामी दयानंद जी का मानना था कि वेद ही हिंदू धर्म का आधार हैं। उन्होंने वेदों पर आधारित एक नया धार्मिक आंदोलन शुरू किया।

एक ईश्वरवाद: स्वामी दयानंद जी एकेश्वरवादी थे। उन्होंने बहुदेववाद और मूर्ति पूजा का विरोध किया।

कर्मकांडों का विरोध: स्वामी दयानंद जी ने अंधविश्वासों और कर्मकांडों का विरोध किया। उनका मानना था कि कर्म और विचार ही मनुष्य को मुक्ति दिला सकते हैं।

राष्ट्रीय विचार

स्वदेशी: स्वामी दयानंद जी स्वदेशी के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने भारतीयों को विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने का आह्वान किया।

हिंदी भाषा: स्वामी दयानंद जी हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा मानते थे। उन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार का काम किया।

राष्ट्रीय एकता: स्वामी दयानंद जी ने सभी धर्मों और जातियों के लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता और भाईचारा का आह्वान किया।

स्वामी दयानंद सरस्वती एक महान विचारक, सामाज सुधारक थे। आर्य समाज के संस्थापक, स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों को ज्ञान का स्रोत माना और वैदिक शिक्षा पर बल दिया। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना और स्वदेशी विचारों को बढ़ावा दिया।

बोध प्रश्न - 7

1. आर्य समाज के संस्थापक कौन थे ?

   ……..

   ……..

   ……..

2. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना कहाँ की ?

   ……..

   ……..

   ……..

3. स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 1876 में कौनसा नारा दिया जिसे बाद में लोकमान्य तिलक ने आगे बढ़ाया ?

   ……..

   ……..

   ……..

13.9 सरदार वल्लभभाई पटेल (31 अक्टूबर 1875 – 15 दिसम्बर 1950)

वल्लभभाई झावेरभाई पटेल भारत के एक स्वतंत्रता सेनानी, अधिवक्ता तथा राजनेता थे। उन्हें लोग सरदार पटेल के नाम जानते हैं। 'सरदार' का अर्थ है "प्रमुख"। उन्होंने भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। उन्होंने 1947 के भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान गृह मंत्री के रूप में कार्य किया। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई।[7]

सरदार वल्लभभाई पटेल 'लौह पुरुष' के नाम से प्रसिद्ध हैं । उन्होंने 'एकात्म भारत' का सपना देखा और 562 रियासतों को एकजुट करके भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उस समय त्रावणकोर, हैदराबाद, जूनागढ़, भोपाल और कश्मीर जैसी कुछ रियासतें भारत राज्य में शामिल होने के विरुद्ध थीं। सरदार पटेल ने रियासतों के साथ आम सहमति बनाने के लिये अथक प्रयास किया लेकिन जहाँ भी आवश्यक हो, साम, दाम, दंड और भेद के तरीकों को अपनाने में संकोच नहीं किया। इन्होने नवाब द्वारा शासित जूनागढ़ की रियासतों और निज़ाम द्वारा शासित हैदराबाद को जोड़ने के लिये बल का इस्तेमाल किया था, दोनों ही अपने-अपने राज्यों को भारत संघ में विलय नहीं करना चाहते थे। सरदार वल्लभभाई पटेल ने ब्रिटिश भारतीय क्षेत्र के साथ-साथ रियासतों का एकीकरण किया और भारत के बाल्कनीकरण को भी रोका। भारतीय रियासतों के भारतीय संघ में एकीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने और रियासतों को भारतीय संघ के साथ जुड़ने के लिये राजी करने हेतु इन्हें "भारत के लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है।[8] उनके विचारों ने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया जो आज भी प्रासंगिक हैं।

सामाजिक विचार

सामाजिक न्याय: सरदार पटेल सामाजिक न्याय और समानता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने जातिवाद, छुआछूत और अन्य सामाजिक बुराइयों का विरोध किया। उन्होंने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (एससी/एसटी) समुदायों के उत्थान के लिए काम किया। उन्होंने शराब के सेवन, छुआछूत, जातिगत भेदभाव और महिला मुक्ति के लिये व्यापक पैमाने पर काम किया। उन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के साथ खेड़ा सत्याग्रह (1918) और बारदोली सत्याग्रह (1928) में किसान हितों को एकीकृत किया। बारदोली की महिलाओं ने वल्लभभाई पटेल को 'सरदार' की उपाधि दी, जिसका अर्थ है 'एक प्रमुख या एक नेता'। सरदार पटेल को आधुनिक अखिल भारतीय सेवाओं की स्थापना करने हेतु 'भारतीय सिविल सेवकों के संरक्षक संत' के रूप में भी जाना जाता है।

महिला सशक्तिकरण: सरदार पटेल महिला सशक्तिकरण के समर्थक थे। उन्होंने महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, समाज में योगदान करने और पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

---

[7] https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A4%B2%E0%A5%8D%E0%A4%B2%E0%A4%AD_%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%88_%E0%A4%AA%E0%A4%9F%E0%A5%87%E0%A4%B2

[8] https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sardar-vallabh-bhai-patel

ग्रामीण विकास: सरदार पटेल ग्रामीण विकास के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। उन्होंने ग्रामीण उद्योगों को बढ़ावा दिया, शिक्षा का प्रसार किया और स्वदेशी वस्तुओं का समर्थन किया।

धार्मिक विचार

धर्मनिरपेक्षता: सरदार पटेल एक धर्मनिरपेक्ष नेता थे। उन्होंने सभी धर्मों का सम्मान किया और धर्मनिरपेक्षता को भारत की नीति का आधार माना। उन्होंने कहा, "भारत सभी धर्मों का देश है।"

सर्वधर्म समभाव: सरदार पटेल सभी धर्मों और समुदायों के बीच शांति और सद्भाव चाहते थे। उन्होंने कहा, "सभी धर्मों के लोग समान हैं और उन्हें समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिए।"

राष्ट्रीय विचार

राष्ट्रीय एकता: सरदार पटेल राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने कहा, "हमें एकजुट रहना चाहिए और भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाना चाहिए।"

राष्ट्रीय सुरक्षा: सरदार पटेल राष्ट्रीय सुरक्षा के महत्त्व को समझते थे। उन्होंने कहा, "हमें अपनी सेना को मजबूत बनाना चाहिए और देश की रक्षा करने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

आत्मनिर्भरता: सरदार पटेल का मानना था कि भारत को आत्मनिर्भर बनना चाहिए। उन्होंने कहा, "हमें अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना चाहिए और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।" उन्होंने भारत के लोगों से एकजुट (एक भारत) होकर एक साथ एक अग्रणी भारत (श्रेष्ठ भारत) बनाने का अनुरोध किया। यह विचारधारा अभी भी 'आत्मनिर्भर भारत' पहल में परिलक्षित होती है जो भारत को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करती है। उन्होंने भारतीय संविधान सभा की विभिन्न समितियों का नेतृत्त्व किया-

- मौलिक अधिकारों पर सलाहकार समिति।
- अल्पसंख्यकों और जनजातीय व बहिष्कृत क्षेत्रों पर समिति।
- प्रांतीय संविधान समिति।[9]

सरदार वल्लभभाई पटेल एक महान नेता, सामाजिक सुधारक और राष्ट्र निर्माता थे। उन्होंने भारत के सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन को नया रूप दिया। वे आज भी भारत और दुनिया भर के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं।

बोध प्रश्न - 8

1. स्वतन्त्र भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री कौन थे ?
2. सरदार वल्लभभाई पटेल किस नाम से प्रसिद्ध हैं ?

[9] https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sardar-vallabh-bhai-patel

3. सरदार वल्लभभाई पटेल ने कितनी रियासतों को एकजुट करके भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई ?
4. कौन सी दो रियासतें अपने-अपने राज्यों को भारत संघ में विलय नहीं करना चाहते थे ?

अभ्यास प्रश्न - 4

1. आत्म-निर्भरता को लेकर सरदार वल्लभभाई पटेल के विचारों को अपने शब्दों में लिखें।

……..

……..

……..

……..

……..

13.10 सारांश

विद्यार्थियों ! इस इकाई में आपने देखा कि किस प्रकार भारत विभिन्न विचारों और दर्शनों का देश रहा है। सदियों से, अनेक विचारकों ने सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न पहलुओं पर गहन विचार किए हैं। और इन विचारों ने भारतीय संस्कृति और समाज को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास (1857 ई. से 1947 ई. तक), डॉ. ए. के. मित्तल, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020
- संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीय भावना, हरि नारायण दीक्षित, देववाणी परिषद्, नई दिल्ली, 1983
- राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय एकता, रामधारी सिंह 'दिनकर', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1957.
- राष्ट्रीयता एवं भारतीय साहित्य, डॉ. शशि तिवारी, विद्यानिधि प्रकाशन, दिल्ली, 2019.
- राजनैतिक सिद्धान्त और शासन, डॉ. कृष्णकान्त मिश्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. अनूपचन्द कपूर, प्रीमियर पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1967.
- राजनीति विज्ञान के सिद्धान्त, डॉ. पुखराज जैन, साहित्य भवन, आगरा, 1966.

13.12 बोध/अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1 के उत्तर

1. 25 वर्ष की आयु में।

2. 31 मई, 1893 को
3. 11 सितम्बर, 1893 को

अभ्यास प्रश्न - 1 के उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 2 के उत्तर

1. ब्रह्म समाज के।
2. शिक्षा को।

अभ्यास प्रश्न - 2 के उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 3 के उत्तर

1. सत्य शोधक समाज नामक संस्था का।
2. पुणे में।
3. सावित्रीबाई फुले

बोध प्रश्न - 4 के उत्तर

1. भीमराव आम्बेडकर
2. सन् 1990 में
3. 1956 में

बोध प्रश्न - 5 के उत्तर

1. सत्य और अहिंसा के माध्यम से
2. स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग और कुटीर उद्योगों को

अभ्यास प्रश्न - 3 के उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

बोध प्रश्न - 6 के उत्तर

1. गुरु नानक देव
2. गुरुद्वारा ननकाना साहिब पाकिस्तान में

बोध प्रश्न - 7 के उत्तर

1. स्वामी दयानंद सरस्वती
2. मुम्बई में
3. 'स्वराज्य' का

बोध प्रश्न - 8 के उत्तर

1. सरदार वल्लभभाई पटेल
2. 'लौह पुरुष' के नाम से
3. 562 रियासतों को
4. नवाब द्वारा शासित जूनागढ़ की रियासत और निज़ाम द्वारा शासित हैदराबाद की रियासत

अभ्यास प्रश्न - 4 के उत्तर

1. इस प्रश्न का उत्तर अध्येता स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY